प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति का क्रमबद्ध अध्ययन

डॉ0 शशिबाला

प्राचीन भारत में प्रारम्भ से ही स्त्रियों का जीवन स्वतन्त्र नहीं रहा और वे पिता, पति तथा पुत्र के नियन्त्रण में रहीं। प्राचीन साहित्य एवं कला में स्त्रियाँ लौकिक तथा धार्मिक कार्यों में पतियों के साथ प्रदर्शित की गई हैं जिससे ज्ञात होता है कि वे सामाजिक और धार्मिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। प्रभावती गुप्ता, नागनिका आदि अपने अवयस्क पुत्रों की अभिभावक के रूप में शासन का भार सम्भालती थीं। अनेक महिलाएँ प्रतिष्ठित शिक्षिकाओं (उपाध्यायों) के रूप में कार्य करती थीं। इस पक्ष के विपरीत कन्याओं का उपनयन संस्कार नहीं किया जाता था। स्त्री के सतीत्व एवं पतिभक्ति पर अत्यधिक जोर देकर उसकी स्वतन्त्रता को काफी सीमा तक सीमित कर दिया गया था। लेकिन साथ–ही–साथ इस विश्वास के भी अनेक प्रमाण मिलते हैं कि प्राचीन काल में स्त्री को आदर्शात्मक तथा मर्यादायुक्त सम्मान भी प्राप्त था। स्त्री को सर्वशक्ति सम्पन्न स्वीकार करते हुए, उसे विद्या, यश और सम्पत्ति का प्रतीक माना गया।